वेदिका-हंसिका
मंगलकुल संगम में

डॉ. उम्मेद सिंह बैद 'साधक'

Published By
Shreyansh Innovation Pvt. Ltd.
113 Park Street, Kolkata - 700016

Vedika- Hansika Mangalkul Sangam me
Written by Dr. Ummedsingh Baid 'Sadhak'

Published by : Shreyansh Innovation Pvt. Ltd.
Poddar Point, 113 Park Street,
Kolkata - 700016

©All rights reserved to Publisher

Printed By : CDC Printer
45, Radhanath Colony Road
Tangra Industrial Estate-II,
Kolkata 700015

DESIGN AND ART: PATHIK SAHOO

परिवार के लिये सप्रेम भेंट

वेदिका-हंसिका मंगलकुल संगम में
डॉ. उम्मेद सिंह बैद ' साधक '

प्रकाशक : श्रेयांश इनोवेशन्स प्रा. लि.
पोद्दार पॉएन्ट, ११३ पार्क स्ट्रीट,
कोलकाता – ७०००१६

मुद्रक : सि.डी.सि. प्रिंटर
४५,राधानाथ कॉलोनी रोड,
टैंगरा इंडस्ट्रियल इस्टेट- II
कोलकाता- ७०००१५

आवरण और चित्र सज्जा: पथिक साहू

(1)

रात तेरे सपनों में गुजरी सुनो सुबह का हाल
उठकर हॉल में आया मैं था हॉल बड़ा बेहाल।

कौना कौना ढूंढ रहा था, तव कदमों की चाप
कल दोपहर से कहां खो गई वह घुंघरु आवाज।

फर्श पूछता दीवारों से दीवारें फिर छत से
नीचे ऊपर सभी हो रहे डूबे गम दरिया में।

कौन किसे उत्तर देता, अब कौन संभाले किसको
तुम तो हो चैन्नई बेटा, कौन फंसाए मुझको?

इक कोने में बुझे बुझे सुस्ताए दो बैलून
कहां गई वो चहक किसे बतलाए वो बैलून?

(2)

आस्था या चेतन आता, वे ढूंढ ढूंढ कर जाते
गुड़िया की चाहत से बंधकर दौड़े-दौड़े आते।

जोश जोश में घंटी मारे बिल्डिंग के सब दोस्त
तुम्हें नहीं पाते तो सबका ठंडा पड़ता जोश।

घर-बाहर, ऊपर नीचे कौना कौना हर कण कण
वेदिका को ढूंढ रहे हैं लोकनाथ के जन जन।

हम समझाएं किस किस को कब कब डांटे
रविवार का पूरा दिन ही इस उलझन में काटें

तेरे दोस्तों की आंखो से हम भी तुझको ढूंढे
कब आओगी लौट के ओ मस्तान तुझे हम पूछें।

(3)

रोती ही रहती है नानी दिवस तीसरा बीता
आंसू पौंछे कौन बाबू तो चैन्नई मैं रहता।

भौंचक ही जगकर चीखे बाबू रोती है मेरी
भौंचक देखे सुप्रिया मति मारी गई है तेरी।

कानों में आवाज तेरी आंखों में तू ही तू है
अब तक तो जेहन में बाबु तू ही तू है।

सच मानों इस घर को तेरी आदत पड़ी है खूब
जानते हैं कि तू तो वहां भी धूम मचाती खूब।

दीवावली के दीप चमकते देख तेरी मुस्कान,
ऐसी ही हँसती खिलती रहना तुम सबकी जान।

(4)

पूछ रही तेरी मामीसा कि बाबू कब आयेगी,
माँग रहा है पलंग कि सूसू फिर कब बरसाएगी?

मेरी क्या गलती थी गुड्डू मैंने कभी ना टोका,
तेरे नाना ससुर मेरे हैं, सिर्फ उन्होंने रोका।

तेरे बहाने मामा तेरे जल्दी घर आ जाते
तेरे संग में नाचकूद कितना प्यारा मुस्काते।

तुम तो कमाल हो गुड्डू सबको ही खुश कर देती,
वहां भी चाची, चाचा, दादी सब का मन हर लेती।

कभी कभी जो फोन पे ही सुन पाएं तेरी बात,
हम भी खुश हो जाएं गुड्डू यह है दिल की बात।

(5)

नानाजी की भूख कम हुई बेदु नहीं है साथ
मंत्र बोलती भी भोजन का हरदम मेरे साथ।

दौड़ दौड़ के आती थी माथा टेके पैरों में,
सटपट भाग छुटे बेदु ना आए मेरे हाथों में।

सबको ही खुश करती थी तुम पूरा घर कहता है,
मुझसे ज्यादा तेज हो तुम तो मेरा मन कहता है।

रोशन करोगी नाम पिता का तुम कितनी एक्टिव हो
नानासा की प्यारी दोहिती उन जितनी एक्टिव हो।

मंत्र बोलना भोजन से पहले है अच्छी बात
नानासा की सीख सदा ही रखना बिटिया याद।

(6)

गद्दे की चादर बदली तो याद तुम्हारी आई,
निकल पड़ी वो सारी चीजे जो तुमने थी छुपाई।

लेकर भागी पेन तो पीछे भी नाना की डाँट,
लोहे की पिन पलंग में डाली तो मासी की डाँट।

डांट खाकर भी अपनी प्यारी चीजे ना छोड़ो तुम,
झटपट से गद्दे के नीचे छुपा के खुश हो लो तुम।

ऐसे सारे खेल तुम्हारे अब बन गई हैं यादें
हरेक याद संग चेहरा तेरा करता प्रतिपल बातें।

बातों और यादों की यह बारात हमारे संग है,
बाद तेरे जाने के अब तो हंसी यहां की तंग है।

(7)

भाई दुज पर तिलक लगाने स्मार्ट नानी आई थी
बस तेरी ही चर्चा में सबके मन को भाई थी।

साल्टलेक से स्वाति ईशू, गुल्लू, इल्लू अर्हम।
डॉक्टर नानी के बच्चे भी तेरी याद में थे गुमशुम

टीके से टीकी की चर्चा तुम थी टीकी चोर,
अब तो टीकी का पत्ता हो जाता बिल्कुल बोर।

इतने बच्चे धूम धाम थी, मगर कहां तोड़ ताड़
तू रहती तो दीवारें तक हो जाती दो फाड़।

पता नही तूफान आजकल क्यों है ठंडा ठंडा
तेरे सामने पड़ जाता है उसपर पानी ठंडा।

(8)

हेलो प्रिय मस्तान करो हैंड शेक बताओ हाल
गुडबाई करके गई तबसे हम तो बेहाल।
कोई आके तंग करे ना कोई नहीं फंसाता
बाहों का झूला सूना है कौन इसे डोलाता?

नाना चट्टू मारो मैं गलती करके आई हूं,
नानी का बाबू मासी की जान सबको भायी हूँ।

तेरी यादों का प्रवाह ऐसा कि बन गया बाढ़,
गले और सीने पर अब भी आलिंगन है प्रगाढ।

खुद ही दाढ़ी खींच खींच के याद तुझे कर लेता
इन कविताओं में ही नाना तुझसे बातें कर लेता।

(9)

खिल खिलखिलाती हँसी भूले से ना भूले,
सूने पड़े है कब से रानी तेरे दोनों झूले।

बीते हफ्ते का हर दिन पलपल यादें हर घड़ी,
नानी की भीगी पलकें मासी आँसू की झड़ी।

हँसिका तेरा छोटा बाबू रखना उसका ध्यान,
मम्मी जाएगी आफिस तुम रखना मां का मान।

समझदार तुम पूरी हो चाहे जो कर सकती हो,
लाडली पापा की खुशियों से घर तुम भर सकती हो।

चाचा बुआ फूफाजी दीदी भैया सब दोस्त
तेरी मस्ती से बन जाए सारी दुनिया दोस्त।

(10)

नाना छोड़ो काम सिखाओ मुझको लिखना ओम
भुर्भुव स्वः फिर बोलूंगी पहले सिखादो ओम।

मैजिक स्लेट की दोनो कलमें पुनः मिल गई बाबु,
स्लेट का घेरा भी रोए, तुम आई ना उसके काबू।

वन टू थ्री सब कलर पशु-पक्षी और काम की चीजें,
सबसे तेरी हुई दोस्ती कहती है सब चीजें।

छत पर गए घूमने तो चन्दा मामा भी चीखे,
ऐरोप्लेन से भी आती है बड़ी जोर की चीखें।

धरती से अम्बर तक कणकण में दिखता तेरा रुप
इसीलिए ज्ञानी कहते बालक है ईश्वर रुप।

(11)

छिपी हुई दीवारों पर तुमने जो दिए निशान,
तेरी याद दिलाने हैं अब प्रिय बन गए निशान।

मामा बोला अब ये दाग कभी ना मिटाएंगे हम,
खुद देखोगी बड़ी होकर तो शरमाओ गुड्डु तुम।

तेरे संग खुलकर हंसने की राह हम सभी देखें,
लौट के कब आओगी बोलो राह हम सभी देखें।

तेरी मस्ती वहां भी बिखरी पापा ना छोड़ेगें,
भर्ती हो जाओ स्कूल में सब तुमको चाहेंगे।

चलो लाडली तुमसे मिलने हम आएं चैन्नई,
उसी बहाने सब अपनों से मिलकर हम हर्षाएं।

(12)

मामा आफिस गए और नानी मीटींग में
मासी तो कालिज जाए पापा चैन्नई में।

मम्मी से बढकर मासी की बात सुने तो
मम्मी को गुस्सा आए मासी पर फिर तो।

मासी मम्मी का झगड़ा मुश्किल बाबू की
बाबू बढकर पौंछ रही आंखें दोनों की।

नन्हे नन्हे हाथ गाल पर जब आते हैं
रोते रोते ही नयना झट मुस्काते हैं।

रोते रोते मुस्काने के फन में माहिर
कहो कौन सा काम ना जिसमें तुम हो माहिर।

(13)

इक नन्ही सी परी खो गई कोई ढूंढ के ला दो
बदले में क्या क्या चाहिए दिल खोल हमें बतला दो।

टीवी, फ्रिज, गाड़ी बंगला रुपयों गहनों की मांग
कोई भी ना करे बहुत छोटी होगी यह मांग।

शैतानी मुस्कान लिए वे नन्ही सी दी आंखे
हमें चाहिए वही दौड़ती परी संग दो पांखे।

बदले में मांगो खुशियां पुण्य हमारे लेलो
एक जनम क्यों जनम-जनम के सारे ही सुख ले लो।

मिनट, घड़ी, दिन करते करते बीत रहे दो सप्ताह,
हमें भूल ना जाए गुड़िया यही गुजारिश करता।

(14)

छोटे छोटे कपड़े और ये नन्हे नन्हे जूते
तू नहीं तो तेरी याद दिलाते हैं ये जूते।

खिड़कियों को देख देख मन में मुस्काती नानी
वहां बिठाकर तुम्हें करते काबु तेरी शैतानी।

बिजली पलग या छर कोईल खतरनाक लगते थे,
जहां तहां पानी बिखराती कितना सब डरते थे।

नाना से मासी सब अम्मा भी करती याद,
सबको रखती व्यस्त और खुश पूरा घर आबाद।

तेरे साथ ही चिल्ला चिल्ली नाच हँसी और नृत्य
चले गए सब अब दीवारें याद करे पल सत्य।

(15)

आस्था की मम्मी का चेहरा देखा उतरा उतरा
जबरन मुस्काई बोली गुड्डु की याद मैं उतरा।

ऐसे ही चेतन की मां और डांस के सारे दोस्त,
वेदिका हित ताक-झांक करते हैं दिनभर दोस्त।

बेचारों को पता नहीं वेदिका मस्त पापा संग,
मम्मी आफिस जाएगी तो खेलेगी हंसिका संग।

दादीसा की डबल लॉटरी मिली पोतियां दो दो
सारी दुनिया बिसराई थोड़ी फुरसत भी हो तो।

लगा नाचने घर आंगन खिल खिल चलती है दिनभर,
थोड़ी खुशियां इधर भी दे दो बात करो फोनवा पर।

(16)

तेरी याद में आज निकला वही ब्लाक्स का थैला,
बनाए नाना बाबू बिगाड़े मजेदार था खेला।

बना के बैठा हूं कब से कोई तो बिगाड़े आके
देख-देख तारीफ कर रहे सब जन आते जाते।

कैसे मैं समझावूं ना तारीफ चाहिए मुझको
हक से आकर बिखराए मस्तान चाहिए मुझको।

लिखते पढते कभी अचानक फैंक देती सब पेपर,
गाल सटाकर लेट जाती थी तुम मेरे पट्टे पर।

अब कोई कैसे डांटे गुस्सा काफूर है सारा,
मीठी सी मुस्कान देख नाना तो गया बेचारा।

गुस्से का नाटक भी हो लेकिन उससे पहले ही
होठों पर अंगुली रखकर चुप कर दो तुम पहले ही।

चूहे जैसा कद है लेकिन सबके कान कतरती
कोई कुछ भी कह ना पाए सब पर भारी पड़ती।

होनहार बिरवान वेदिका तेरे चीकने पात
बहुत शीघ्र ही मान जाएगा सारा जग यह बात।

(17)

बहुत देर से बजता मेरा म्यूजिक सिस्टम दोस्त
इन्तजार है आकर बन्द करे इसको अब कौन?

कौन टीवी का चैनल बदले तंग करे नाना को
कौन पकड़ के हाथ घुमावे घोड़ा बनाए नाना को।

गारगड़ी या पैर पे सूला या फिर ऊंट बनावे
छत पर दौड़े तेज और नाना पीछे दौड़ावै।

नाना पकड़ो बाबू को ये शहद से मीठे बोल
ये देखो मस्तान दौड़ता कपड़े सारे खोल।

नानी पहनाती पैंटी तुम झट से गीली करती,
खोल के फेंकी दूर स्वयं ही दौड़ी फिर इतराती।

पर बाहर जाने के नाम से झटपट हो तैयार,
सुन्दर कपड़े जूते मौजे पहन के सट तैयार।

जानबूझकर गड्ढे के पानी में रखती पांव
हाथ छुड़ाके खुली सड़क पर दौड़ने का है चाव।

नानी, नाना, मम्मी मासी चार जने भी कम हैं,
छूटने को दौड़ी बस टक्कर का कैसा गम है।

(18)

लो अब सुनलो बात भरोसा आना भी मुश्किल है
मगर क्या करुं यह लिखकर मेरी हालत मुश्किल है।

होम्योपैथी वाला डॉक्टर तुम पर हुआ दीवाना
दवा देने से पहले पूछ रहा था तेरा ठिकाना।

नाम याद रह गया दुष्ट को हँस कर पूछ रहा था
कैसी है वेदिका? कहां हैं? ये सब पूछ रहा था।

एक बार तेरे पांव पड़े थे हो गया बंटाढार
जाने और कहां कितने जन तेरे लिए बलिहार।

मैं यही समझकर बैठा था तुमने बस मुझे फंसाया
बूद्धू था जो तुम पर इकलौता अधिकार जताया।

तुम नदिया हो जो भी आया तुमसे अमृत पाया
तुम सागर हो प्रेम भरा सबको तुमने हर्षाया।

निश्छल निर्मल प्रेम तुम्हारा सबके मन को भाया,
तेरा बना वो जो भी एकबार तुमसे मिल पाया।

घर-बाहर, पूरब से पश्चिम दसों दिशाएं तेरी
जीत लो अपनी मुस्कानों से सारी दुनिया तेरी।

(19)

सच बोलूं तो चिड़ियाघर जाने से अब डरता हूं
स्वप्न बहुत प्रिय है मुझको फिर भी डरता हूं।

जहां जहां तुम गई वहीं पर इतने दोस्त बनाए
सभी पूछते तेरी खातिर हम क्या उन्हें बताएं।

आज गया जेरोक्स कराने पास में है दुकान
उसने भी मुस्का के पूछा कहां है वह शैतान।

पलभर भी वह टिक ना पाए बाहर दौड़ लगाए
कोई पकड़ना चाहे तो मुँह फाड़ के वो चिल्लाए।

चिड़ियाघर में तो तुमने इतना प्यार लुटाया
छोटा बाबू कहकर सबका ही चेहरा सहलाया।

हैरत में पड़ जाता था वह आठ साल का बच्चा,
कैसे हो विश्वास प्यार हृदय में तेरे साथ।

बच्चे के संग जो रहते सबसे ही हाथ मिलाना
कैसे कोई इग्नोर करे तेरा चेहरा है मस्ताना।

पता चले उनमें से कुछ जन रोज वहां आते हों
फिरसे मिलने की प्यास लिए जू में आते हों।

वे आएं ना आएं पर वे बंदर भालू, शेर
राह देखते नित्य पूछते करदी इतनी देर।

होंगे तेरे दोस्त मगर मैं तो डरता हूं
तेरे बिना मैं जू जाने से अब डरता हूं।

(20)

पता चला कि तुम्हे टट्टियां लगती हैं भरपूर
पतला पाखाना कर देता है शरीर को चूर।

बारिश का मौसम लाता है बिमारियां अनेक,
पेट की अग्नि मंद पड़े यह मुख्य बीमारी एक।

पाखाना ज्यादा होने से पानी कम हो जाता,
ORS का घोल जरुरी प्राणदायी बन जाता।

हल्का भोजन, औषधि, प्रथम जरुरी हो जाता है
हल्की सूर्य धूप का सेवन लाभदायक होता है।

खेल और चंचलता सारी सिकुड़ गई है तेरी,
चिन-पिन-चिड़चिड़ जो होती मजबूरी तेरी।

बीमारी का दौर शीघ्र ही बीत जाएगा तेरा
फिर से वही मस्ती वाला स्वरुप निखरेगा तेरा।

भीतर की शक्ति और थोड़ा सा अनुशासन माँ का
तुम्हें शीघ्र ही स्वस्थ बनाए दुलार पूज्या माँ का।

मम्मी से बढकर होती है माँ का प्यार दुलार,
यही जरुरी बन जाता है भारत का परिवार।

(21)

पूरा चान्द चमकता नभ में फिर भी तुमसे फीका
तेरा चंदा मामा तुमसे भी है कुछ कुछ फीका।

तेरी चमक भरी आंखों में जीवन के स्पन्दन हैं,
तेरी खुश्बू से मेरी-सबकी सांसे चंदन है।

वह चन्दा है दूर गगन में यह चन्दा बाहों में,
वह बहलाता यह चन्दा तृप्ति भरता भावों में।

घोर निराशा के आलम में तुम हो आशा दीप
बेरंग जीवन को कर देती तुम रंगो के दीप।

दुःखो के अनवरत प्रवाह की तुम सशक्त बाधा हो,
मोहन की वंशी कान्हा की प्राणप्रिया राधा हो।

हंसी की खन-खन सप्त सुरों का मनभावन अनुराग।
हर लीला है राग भरी हर खेल में दिव्य विराग।

निर्मल निश्छल मुस्कानों में झांक रहे धनश्याम,
बिनमांगे ही सुख देती तुम ज्यों देते श्रीराम।

वेदिका का वेदन करता रोम रोम उत्फुल्लित,
अनायास ही शब्द झर रहे मन मेरा रोमांचित

(22)

इन कविताओं में तेरी यादों के फूल गुंथे हैं
इन पत्रों में एक-एक जन के मन के भाव भरे हैं।

जो भी इनको पढता है सबको अच्छा लगता है,
तेरी यादों का गुबार मन में उठता लगता है।

तेरी लीलाएं सबके सामने पुनः आ जाती
मन करता है वेदिका तुम पुनः यहां आ जाती।

मासी से बढकर तेरी नानी हो गई है खाली
मामी मामा ढूंढ रहे घर की खुशियाली।

तेरे बर्थ डे पर आया था जो नानियों का रेला
हर नानी का दावा है तुम प्यार हो उसका पहला।

सब तारीफ करें लेकिन मन मेरा कहां भरता है,
जी चाहे कुछ और लिखुं आधा अधुरा लगता है।

शब्दों में कैसे आए तेरा लीला संसार,
एक एक बन जाएं चाहे कविताएँ अपरम्पार।

घर अंगना सूना है मेरा मन आंगन मुस्काता,
चँट चुलबुला बाबू इन यादों में आता जाता।

(23)

पूरे ग्यारह दिन बीते मैं लिख ना पाया तुमको
क्या बोलूं मैं दीवाना बना कैसे बतलादूं तुमको।

तुमने की बात कान में अमृत जो ढलकाया,
नशा चढा इतना ज्यादा मैं दीवाना बना बौराया।

मन बुद्धि हतप्रभ कैसे मैं प्रकट करु वे भाव,
गूंगे ने गुड़ खाया गुड़िया कैसे बताए भाव?

कहां जानता था तुमसे बतियाने से यह होगा,
मन प्राणों में वेदिका सुर दिवस रात गूंजेगा?

(24)

जबसे सुना तुम आओगी मम्मी पापा के संग,
मंगल कुल संगम में तुम भी रहोगी सबके संग।

मंगल बाग में वेदिका स्वर क्या अनुपम संयोग,
'राम नाम' संग वेदिका, योगी समझेगा योग।

अब तक सुनते आए हैं, है बाग विशाल अपार,
छम छम करके दौड़ोगी, कर लोगी पूरा पार।

देश के चारों कोनों से परिवारी जन आएंगे,
बिन आज्ञा चोरी करके तेरी यादें ले जायेंगे।

है अनजान तेरी महिमा से यादें कब छुपती हैं,
आंखों से या बातों से सब पर ही शीघ्र खुलती हैं।

इसी बहाने नाम वेदिका पूरे देश में फैले,
निर्मल और मासूम हंसी की शोभा जन जन फैले।

(25)

नानी मासी मामा मामी सबकी करती बात,
नाना कहीं नहीं जाते तो क्यों हो उनकी बात?

यादें तब ही आती है जब कोई दूर हो जाता,
नाना के दिल में बैठी हूँ, कैसे कोई भरमाता।

भले मैं पढता बाबू क्या लिखते हैं रोज कविताएं
सब जानती उनके दिल को, वे सबको ही बहलाएं।

नकल मेरी कर करके नाना बड़े कवि बनते हैं,
मैं हूं उनकी गुरु देखती हूं कितना बनते है।

(26)

खाता हू और पढता भी हूं उस छोटी टेबल पर
आराम भी पाता हूं कोहनी टिकाकर उसपर।

कभी फोन करना हो मुझको तो भी उसी पर जाता
सावधान न रहूं तो कभी वहीं उलट भी जाता।

इस घर से उस घर तक मेरे संग यह टेबल जाती,
बिल्कुल वैसे ही जैसे मस्तान दौड़ कर आती।

तूने मुझे फंसाया ऐसा अब तक छूट ना पाया,
तू गई तो तेरी इस टेबल ने राज जमाया।

सब समझाते हैं मुझको प्लास्टिक का एक खिलौना,
मोह लगा है इससे ज्यों हो हीरे मोती सोना,

जड़ चेतन का भेद मिटा देते है मन के भाव,
रंक मुझे समझे सारे निज भावों में हूँ राव।

(27)

मैं न लिखता लिखवाता है कोई इन हाथों से।
खुश होता सुन्दर काव्य देख न इतराता मैं खुद से।

तुम्हे भेजता नित्य नई कविता यह रचना
कौन समझे आत्म निवेदन ये तुम्हारे बिना।

सज्ञान होके भुला दोगी ये खेल दुस्तर माया।
चाह कर लिख न पाता सोच समझ शरमाया।

तुम समझो प्रकट ना करते, आ जाओ
छिप के मुस्काओ और मुझे फसाओ।

परिवार भाव

मंगल है परिवार का सुदृढ़ शान्त प्रवाह
व्यक्ति का विस्तार ही बने कौटुम्बिक भाव।

जीवन भर सुख शान्ति, मौत बने संतोष
परिवार की एकता लोक लोकोत्तर तोष।

सुख बढ़कर हो सौ गुणा दुःख बनता जब लेश
परिवार के संग में रहे द्वेष ना क्लेष।

ऐहिक उन्नति और यश ईश्वर दे भरपूर
जिस आंगन में प्रेम का दीपक जले जरुर।

अपने सुख को भूल जा परिजन को दे प्यार
इक दूजे के प्रेम से बंधा रहे परिवार।

जीवन भर देता रहे प्यार और विश्वास
यंही देवता संस्कृति परिवार की सांस।

लेने से छोटा बने देकर बनो महान
सांस सांस देकर रखो परिवार की आन।

शिव परिवार

शिव शंकर परिवार ही है उत्तम आदर्श
जानी दुश्मन बाँटते यहां परस्पर हर्ष।

शिव वाहन नन्दी खड़ा उमा सिंह असवार
दुनियां अचरज कर रही देख अलौकिक प्यार।

सर्प खेलते कंठ पर कब करते एतराज
कार्तिकेय का मोर भी करता आँगन राज।

सर्प मोर संग संग रहे मूषक भी बैखौफ,
भूले से ना तानते इक दूजे पर तोप।

देवी लक्ष्मी शारदा रहे विनायक संग,
उल्लूक और राजहँस शिव आंगन में संग।

अलग अलग स्वभाव है, भिन्न सभी के ढंग,
फिर भी सब कहला रहे शिव परिवार के अंग।

इसीलिए तो कर दिया शिव का मंगल अर्थ,
सबका मंगल साधता, वह परिवार समर्थ।

महादेव

भूतप्रेत भी पूजते ऐसे औधड़ देव
देवों की क्या बात है शिव शंकर महादेव।

जटिल केश विन्यास में, है श्मशान निवास,
मुंहमांगा वरदान दें करते नहीं निराश।

नर तो क्या पशु पक्षी भी पूजते सदाशिव
ये सबके हैं देवता आशुतोष हैं शिव।

कालडरे इनसे स्वय कहलाते सदाकाल
मानव क्यों डरताभला, मंगलकारी काल।

महाकाल हैं काल के, हैं कृपाल महादेव,
मंगलमय मृत्यु सदा बतलाते महादेव।

जीवन मृत्यु संग चले पंचभूत यह देह,
तत्व मिले पंचतत्व में आत्मा भी निज गेह।

व्यक्ति और समाज का रिश्ता बने कुटुम्ब,
राष्ट्र बोध की भूमिका सब धर्मों का स्वत्व।

शिव राम

राम पूजते शिवशंकर को शिव जपते श्रीराम
सच पूछो तो दोनों ही करते हैं तत्व प्रणाम।

अक्सर चलता है समाज में शिव विष्णु मतभेद,
अन्तर में मुस्काते दोनों देखें बढता खेद।

विष्णु रुप श्री राम है जीवन शिव मृत्यु के रुप
भले विरोधी लगतें हों पर दोनों हैं अनुरुप।

श्वास कहे निःश्वास जरुरी मृत्यु पूजती जीवन,
अवलम्बित हैं इक दूजे के यही वेद का दर्शन।

शिव मंगल है राम कहें मृत्यु जीवन का अंग,
वैसे ही परिवारी जन होते हैं अंग-प्रत्यंग।

अपना अपना स्थान सभी का अपना अपना मूल्य,
पूरे तन का बोझ ढो रहे पैर सदा बहुमूल्य।

इक दूजे से प्रेम और आदर के भाव जरुरी
परिवार में राम और शिव दोनों तत्व जरुरी।

श्रद्धारुप पार्वती

परिवार का प्राण है श्रद्धा और विश्वास
पार्वती श्रद्धामयी- शिव शंकर विश्वास।

कण कण तन का सींचकर बच्चे को दे जन्म
सिंचन अमृत भाव का करती है आजन्म।

जीवन में सर्वोच्च है माँ का स्थान महान।
माता से मिलती सदा पूज्य पिता पहचान।

मां बाबा से ही बंधी संबधों की डोर,
चाची ताई मामी बुआ बनते चारों ओर।

व्यक्ति का विस्तार है परिवार की टेक,
कभी ना भूलो मूल को माता श्रद्धा एक।

मां का सुख ही फैलकर परिजन का आनंद
मां का आत्मिक तोष ही, है वरदान अनंत।

श्रद्धा का खंडन बने अपरिमित दुःख चक्र
मां को रखो केन्द्र में परिवार ना वक्र।

गणेश स्वरुप

श्रद्धा और विश्वास बल प्रथमपूज्य श्री गणेश
अखिल विश्व मां बाप में बतलाते श्री गणेश।

मात पिता की चरण रज प्रतिदिन सुबहो शाम
अशान्त-क्लान्त परिवेश में देती सुख आराम।

मंगलमूर्ति गजानन हैं सर्जरी चमत्कार
टूटा सिर फिर नव लगा शिव का चमत्कार।

पार्वती कर से हुआ शिशु गणेश निर्माण
शिव को रोका द्वार पर, माँ की आज्ञा मान।

सजा मिली शिव से तभी शीष कटा तत्काल
व्याकुल माँ के रुदन को, शिव ने लिया संभाल।

नर का तन गज का आनन मंगलमय है रुप/वेश
हर मंगलमय कार्य में गणपति रहे विशेष।

लक्ष्मी सरस्वती

सारी दुनियां जानती दोनों में है विरोध
लक्ष्मी-दंभ का ही करे, मां भारती प्रतिरोध।

वीणापाणी का राजहंस रमा-वाहन उलूक
है विरोध दिन रात का कौन सकेगा रोक।

आँख ना खुलती उल्लू की जहां रहे आलोक
जगमग सत-आलोकमय, शारदे माँ का लोक

पर समाज को चाहिए ये दोनों इक-संग
शिव परिवार में देखलो हैं दोनो इक संग।

गणपति के संग में रहे, बनकर रिद्धि सिद्धि
लक्ष्मी और सरस्वती गणनायक की सिद्धि।

राजहँस मोती चुगे रक्षा भी अनिवार्य
लक्ष्मी के संग पार्वती सरस्वती की चाह।

तीनों का हो संतुलन वही स्वस्थ परिवार
अगर समझना हो बहुत देखो शिव परिवार।

समय-संयोजन

चौबीस घंटे ही दिए सबको एक समान
पाते हैं सबजन यहां, प्रभु का प्रेम समान।

बीता पल ना लौटता कर लो लाख प्रयास
हर पल का उपयोग हो तभी बात हो खास।

बारह घंटे काम के बारह ही विश्राम
विष बनता विश्राम तो, संग सदा है राम।

पूजन भोजन योगासन शौच स्नान विश्राम
बारह घंटे दो उन्हें बाकी इतर काम।

काम के विष को सोखले एक राम का नाम
यष्टि-समष्टि-सृष्टि सब स्वस्थ रहे अविराम।

सबको विचलित कर सके काल बड़ा बलवान
स्वास्थ्य संतुलित रखना हो तो करो काल का मान।

मौसम अवसर ऋतु-बदल, रख विवेक को संग
एक एक पल उपयोग हो यही मानवी ढंग।

दिनचर्या

अपने अपने ढंग की दिनचर्या है भिन्न
रहे संतुलन श्वास का ऐसा कार्य अभिन्न।

दिवस मिला है कार्यहित रात में हो विश्राम
निसिचर कहलाते सदा जिनका उलटा काम।

सूर्योदय से पूर्व जो कर लो शौच और स्नान
पाते हैं भगवान से मन चाहा वरदान।

नाश्ते से पहले करो तन-मन बुद्धि शुद्ध
शान्तचित्त परिजन सहित भोग लगाओ शुद्ध।

कार्यालय में समय पर स्वस्थ मना हो प्रवेश
तन्मयता से कार्य का सुचिन्तित श्री गणेश।

चिन्तन मनन योजना सँवरे यात्रा काल
मोबाइल और नेट का बेहतर इस्तेमाल।

भोजन और व्याम का संतुलन स्वास्थ्य
चिन्त भावना सम रहे मिलजाए आराध्य।

स्वास्थ्य

पता चले ना शरीर का हो प्रसन्न सब अंग
खान-पान औषध बने तभी स्वास्थ्य के संग।

भूख लगे तब ही बने सात्विक भोजन योग
ठीक समय पर शौच हो यही स्वास्थ्य संयोग।

मुक्ताहार विहार हो युक्त चेष्टा कर्म
युक्त भाव चिन्तन चले यही स्वास्थ्य का मर्म।

अन्न सरीखा मन बने व्यक्ति व्यक्ति परिवार
देश समाज और विश्व भी व्यक्ति का विस्तार।

है सेवा परिवार की रखे स्वास्थ्य का ध्यान
बीमारी आ जाए तो आयुर्वेद की मान।

दमन करे या सरका दे, ऐलौपैथी तंत्र
शमन करे जड़मूल से सारे दोष स्व-तंत्र।

अपनों का मंगल सधे अपनापन विस्तार
लगन पराई छोड़कर स्वस्थ करो परिवार।

संस्कार

गहरी रेख बना रहे सभी कर्म और सोच
फल देंगें निश्चित कभी गहरी रखना सोच।

जीवन पर ही बन रही संस्कारो की रेख
पुण्य पाप के भाव में फलीभूत हो देख।

शेष नहीं होता कभी जीवन का अध्याय
नया जन्म लेकर सदा कर्जा जीव चुकाय।

निज कर्मों का फल समझ ये परिवारी लोग
प्रेम घृणा के रुप में फल देते सब लोग।

खुद तूने ही था चुना निज परिवेश सुजान
वर्तमान के कर्मो का फल भविष्य है जान।

जीवन में सर्वोच्च है संस्कारो का मोल
मनः कल्पना छोड़कर आत्म तराजू तोल।

यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार हो नित्य
माला सद्संस्कार की समझ के फेरो नित्य।

संगठन

एक की खातिर सब जुटें सबकी खातिर एक
अंगांगी आधार पर बने संगठन नेक।

इक दूजे हित भावना इक दूजे पर प्रेम
सहनशीलता क्षमा स्नेह परिवार के नेम।

झूठ कपट धोखा लिए असत्य-मृदु व्यवहार
ना फलते परिवार में मीठी तेज कटार।

बार बार मिलते रहे बांटे सुख दुःख प्यार
बीच बीच चलती रहे नोंकझौक तकरार।

डिब्बी ढक्कन की तरह फिट हो जाए पार
पलकों में भी ना चुभे ऐसा हो परिवार।

गुणों की चर्चा से सदा विकसित होता प्रेम
आंख मुंद लो अवगुण से बचेगा कुशलोक्षेम।

मंगल कुल संगाम बने संगठना की डोर
संयुक्त परिवार भाव को, पहुंचा दो चहुं ओर।

आंगन हंसता देखलो नन्है बालक संग
खुशियों का भंडार है, लिए हजारों रंग।

दुनियां सारी कह रही बालक है भगवान
घर शिशु से रीता रखे, वे सब जन नादान।

बालक की मुस्कान में, सारे गम काफ़ूर
पति पत्नी लड़ते नहीं हंसी मजाक भरपूर।

बच्चों को बस चाहिए हम उम्रों का साथ,
संयुक्त परिवार में बन जाती यह बात।

गुस्सा जिद्द या अहंभाव इकलौते के दोष
टोली भैया बहन की हर लेती सब दोष।

बच्चे आते ही बने, परिवार का बोध
छड़े रहें जब तक दोनों केवल भोग ही भोग

अच्छे हैं बच्चे सभी गिनती का क्या काम।
प्रभु निवास करते वहां, जो बच्चों का धाम।

माँ

नारी की पूर्णता मां बनने से है
मां बनकर ही
प्रणय और सम्मान की अधिकारिणी
बनती है नारी।
भोग्या नारी-पूज्या बनती है।
मां बनकर।
नए जीवन का सृजन
या तो ईश्वर करता है या फिर मां
उच्चत्तम एवं महानतम पद- मां
परिवार की लक्ष्मी और सरस्वती मां
संकट-त्राता विघ्न संहार कारिणी दुर्गा मां
दो या तीन नहीं
सौ करोड़ की जननी देवपूज्या भारत –मां।

नारी

पुरुष भटकता ही रहे, जो नारी ना होय
परिवार के केन्द्र में बस माता ही सोय।

भोग वृत्ति है पुरुष की नारी की है त्याग
त्याग के बल पर ही टिका जीवन राग-विराग।

श्री ह्री घी घृति शान्ति सब नारी के ही रुप
गौ-गंगा गायत्री गीता भारत नारी रुप।

आंसू या मुस्कान पर पस्त पुरुष बलवान
नारी की महिमा अमित सभी गुणों की खान।

भगिनी, अम्मा, बेटियां; नारी के बहुरुप
मिलती पुरुष समाज को मीठी प्यार की धूप।

उस घर रमते देवता नारी जहां प्रसन्न
दुःख पावे नारी जहां विष है जल और अन्न।

ईश्वर का वरदान है नारी सुख का मूल
नारी के अपमान की कभी ना करना भूल।

वृद्धों का महत्व

सुख दुःख छाया-धूप सब गुजर गए कई बार
वयोवृद्ध जन में भरा अनुभव का भंडार।

चरणकमल में वंदना- प्रतिदिन सुबहो शाम
धन बल यश आयु बढे शीघ्र बने सब काम।

एक एक पन्ने में लिखा जीवन ग्रंथ विशाल
चलता फिरता ज्ञान कोष क्युं ना करे संभाल।

विषम परिस्थिति में सदा ये रक्षक बन जाएं
ठंडी गरम बौछार से हमें बचाते जाएं।

बच्चों में संस्कार का है अचूक यह मार्ग
संरक्षक प्रिय दोस्त बन दिखलाते सन्मार्ग।

भावों के उद्वेग पर ठंडे छीटे डाल
प्राण बचा लेते कभी झगड़े सभी संभाल।

यदा कदा जीवन पथ के मार्ग सभी हो बंद
नया मार्ग दर्शित करे उनकी बाते चंद।

जग को भारत की देन परिवार भाव

भारत का वैशिष्ट्थ है – प्रेम भरा परिवार
मंगल समाज रचना का, है सुदृढ आधार।

शिशु से लेकर वृद्ध तक सबकी सार संभाल
सबका ही उपयोग है सबके सब खुशहाल।

चार अवस्थाएं कठिन इक दूजे बिन दण्ड,
बचपन यौवन प्रौढ-वृद्ध सबके सब उद्दण्ड।

बचपन बूढे से मिले प्रौढ युवा संग दोस्त
जीवन पथ कुसुमित बने मनपसन्द हो दोस्त।

नर नारी विपरीत ध्रुव इक बुद्धि एक भाव,
पूरक बन कर परस्पर दे परिवारी भाव।

बल, बुद्धि, रुचि, शौक से भिन्न भिन्न सब लोग
हुए संगठित प्रेम से सब परिवारी लोग।

भाई भाई हम सभी इक माता के लाल
ऊंचा कर दे विश्व में भारत मां का भाल।

चारपुरषार्थ और परिवार

परिवार से सिद्ध हों चारों ही पुरुषार्थ
धर्म अर्थ और काम मोक्ष परिवार से प्राप्त।

परिवार में पालते सब जन अपना धर्म
सुख-सुविधा और शान्ति पाते जीवन मर्म।

गृहलक्ष्मी से धन बढे बढता संचित कोष
बच्चों की परिपालना और वृद्धों का तोष।

दाम्पत्य सुखपूर्ण हो सधे काम विस्तार
पंच कोष मय व्यक्ति के सूक्ष्म-कर्म साकार।

निज आध्यात्मिक यात्रा जीव करे सम्पूर्ण
कुटुम्ब सुरक्षा तंत्र में कार्य सभी हो पूर्ण।

विद्या और अविद्या का है सुन्दर संयोग
भारतीय परिवार में आर-पार का योग।

इस जीवन में स्थिरता पार का रहे प्रबोध
परिवार के उपकारों का कौन कराए बोध।

श्रद्धा

मात-पिता गुरुजन सदा हैं श्रद्धा के पात्र
सुगम करे जीवन यात्रा इनका इंगित मान।

शास्त्रों में श्रद्धा रहे आप्त वचन ही ज्ञान
भौतिकता के फेर में मतकर मान-गुमान।

अनजानी डोरों बंधा जीवन का गुरु भाग
तर्क कभी ना छू सकें, गूढ तत्व अनुराग।

परम्परा से ही मिला संस्कृति शुद्ध सुमार्ग
सुख पूर्वक मंजिल मिले पूर्ण सुचिन्तित मार्ग।

गहरे में मोती मिले उथले कीचड़ दोष
गहराई परिवार की देती मंगल तोष।

पश्चिम के व्यामोह में तोड़ दिए परिवार
लौटो श्रद्धा भूमि पर यह भारत का सार।

भारत है परिवार का सांस्कृतिक स्वरुप
वसुधैव कुटुम्ब कम परिवार लघु रुप।

विश्वास

श्रद्धा भरी हो चित्त में, बुद्धि में विश्वास
समझो दोनों छोर हैं धरती और आकाश।

विश्वासों पर ही टिका जीवन का सब खेल
एक कदम भी ना बढे अविश्वासी रेल।

माता ने बतला दिया जनक वही विश्वास
दुनियां समझाती फिरे इसे अंधविश्वास।

गुरुजन अहित न कर सके रख अटूट विश्वास
पिता के हाथों में बच्चा उड़े ऊँचे आकाश।

भले असहय दुःख हो यहां छोड़ ना घर परिवार
अपनी भट्टी में जलो समझो खिड़की द्वार।

मन ललचाते व्यर्थ में बहुत दूर के खेत
अपनी प्यारी सी चल्लू खाएगा भर पेट।

सत्य शास्वत मान ले खून से पतला नीर
पश्चिम की आंधी तेरी हरना जाए सभीर।

प्रेम

जटिल पहेलियों से भरा जीवन का व्यापार
सब प्रश्नों का एक हल प्रेम है जीवन सार।

पशु पक्षी नर ग्रह-तारे दौड़ रहे किस आस?
धरती और आकाश में, एक प्यार की प्यास।

उत्तेजित हो चित जब भाव हिलौरे खाय
प्यार भरा कोना कोई तेरी प्यास बुझाय।

धन दौलत ऐश्वर्य सब पति के प्रेम समक्ष
प्रेम के बल अवतरित हों परमात्मा प्रत्यक्ष।

परिवारी सब जन बंधे एक प्रेम की डोर,
प्रेम के बल ही भारत का यश फैला चहुँ ओर।

व्यक्ति से परमात्मा विस्तारित हो प्रेम
अखिल अनन्त विश्व में चहुँदिशी बिखरे प्रेम।

मानवीय सम्बन्धों की उलझन सब सुलझाए
प्रेम पंथ खोले नए बुझते दीप जलाय।

सेक्स

अद्भुत शक्ति सेक्स की चेतन को दे जन्म
भौतिक सुख की आड़ में शापित है आजन्म।

शिव ने काम जला दिया लुप्त जगत आधार
रति के अनुनय से पुनः सक्रिय हुआ विकार।

सीमित हो यदि धर्म से काम मिलाए राम
अनुचर बनकर प्रेम का सेक्स सदा अभिराम।

अक्सर प्रेम और सेक्स को समझा जाता एक
प्रेम चित व्यापार है सेक्स शरीर की टेक।

प्रेम यदि ऊपर उठे अहंकार के पार
परमपिता से भेंट हो, जन्म मृत्यु के पार।

नीचे की यात्रा चले बुद्धि मन-तन आए
मर्यादाएं तोड़ कर पतन-गर्त ले जाए।

जीवन दायी शक्ति जो जीवन करे विनष्ट
वशीभूत हो सेक्स के समाज-चर्चा भ्रष्ट।

सेक्स-शिक्षा

विद्यालय में सेक्स की शिक्षा हुई प्रारंभ
धर्मविमुख अधकचरे जन दिखा रहे हैं दम्भ।

ज्यों बच्चे के हाथ में छुरी आई तेज
अपना भी नुकसान है औरों की भी खेज।

सेक्स के सम्मुख विवश है नर नारी सबलोग
विद्यामंदिरो में चले अनियंत्रित भोग।

बीमारी के नाम पर लूप और कण्डोम
भरे पड़े बाजार में खाज के ऊपर कोढ।।

व्यक्ति और परिवार सब संकट में आज
केवल एक ही मार्ग है धर्म बचाए लाज।

सुख शांति प्रगति पथ है शास्वत आलोक
दिव्य सनातन धर्म से सुंधरे लोक परलोक।

सच्चा शिक्षक धर्म है इससे जुड़कर सेक्स
उपकारी बन जाएगा, हौव्वा नहीं है सेक्स।

प्रेम-सेक्स-समस्या

सभी जानते आजकल घर-घर का है राज
वयः संधि में बच्चों पर चलता प्रेम का राज।

ना सुनते मां बाप की, जेब में गुरुजन लोग
सब दीवारें तोड़कर बच्चे करते मौज।

मनमर्जी की दिनचर्या नियम कायदे फुर्र
भूख लगी और खा लिया धर्म हो गया धुर्र।

पेट और पेट के नीचे की, भुख समझते एक
बस शरीर ही रह गए, देवता पुत्र अनेक।

कर्म भूमि भारत बना, भोगभूमि इण्डिया
कर्म योग को भूल, है रोग-ग्रस्त इण्डिया।

परिवार और भारत का सेक्स प्रबल है शत्रु
धर्मयुक्त पुरुषार्थ से पस्त बनेगा शत्रु।

नरक पंथ से बच सके व्यक्ति और परिवार।
साथी रक्षक पथ-दर्शक एक धर्म परिवार।

सत्य अंहिसादि यम

प्रथम चरण है योग का सत्य अंहिसा धर्म
सामाजिकता के लिए पांचों व्रत है मर्म।

व्यक्ति से ऊंचा सदा परिवार का मान
है समाज के बल पर ही व्यक्ति की पहचान।

व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की मर्यादा परिवार
राष्ट्र संस्कृति रक्षणार्थ समर्थ है परिवार।

अपरिग्रह, अस्तेय व ब्रह्मचर्य की टेक
दूजे के सुख की चिन्ता समाज रचना नेक।

तेरी चिन्ता मैं करु तू रख मेरा ध्यान
क्या होगा इससे बेहतर जीवन यात्रा मान?

सामाजिकता के नियम व्यक्तिगत उत्थान
विश्व समाज हित जानले उत्तम संविधान।

पाँच व्रतों की पालना श्रेयष्कर सब ओर
व्यष्टि से सृष्टि बने सुखी ओर से छोर।

संतोष/तप

उतने पांव पसारिए जितनी लम्बी सौर
सदा सुखी है संतोषी थामे संयम डोर।

पेट भरे सारे जग का अन्यपूर्णा माय
लेकिन लालच का घड़ा कभी ना भरने पाय।

आवश्यकता कम रहे, व्यक्ति रहे स्वतंत्र
भोगों से दुःख ही बढे, संयम सुख का मंत्र।

सादे जीवन संग सदा, सोहे उच्च विचार
व्यर्थ दिखावे में भरा आडम्बर बेकार।

तन-मन हलके ही भले नहीं बढाना बोझ
घर में फर्नीचर भरा, अतिथियों पर बोझ।

जो कुछ ईश्वर ने दिया, समझो कृपा प्रसाद
थाली पराई देखकर ना कर दुःख आबाद।

भाग्य समय से पहले कुछ ना मिलता भोग
संतोष से बनता है, सुख शान्ति का योग।

तप

तपोभूमि यह देश है, भोग पराया मंत्र
तप ही अपना यश वैभव तप ही है स्वतंत्र।

स्थिरता तन की देहतप वाणी का तप मौन
स्वाध्याय तप ध्यान है सहनशीलता मौन।

आजीवन मां तप करे, तब संभले परिवार
पिता करे अर्जन तभी सुख सम्पत्ति साकार।

सहनशीलता से टिके परिवार का तंत्र
ममता, करुणा और दया, सभी प्रेममय मंत्र।

तप के बल पर ही टिके ये धरती आकाश
तप के बल पर ही चले श्रद्धा और विश्वास।

सबकी अपनी भूमिका सबके हैं कर्तव्य
उन्हें पालना धर्म है तप का है मंतव्य।

परिवार की साध में व्यक्ति तप वन जाए
जीवन आराधन बने सृष्टि तप बल पाए।

व्यक्ति नहीं है
सामाजिकता केन्द्र
परिवार है।

स्वतंत्रता से
बढकर सुरक्षा
धर्म की मानो।

व्यक्ति से नहीं
परिवार से बने
संस्कृत-राष्ट्र।

व्यष्टी-समष्टि
से सृष्टि परमेष्टि
अखण्ड चक्र।

व्यक्ति से ज्यादा
महत्व समाज का

कुल की आन
संवर्धित करने
व्यक्ति कुर्बान।

व्यक्ति का हित
जुड़ा परिवार से
स्वतंत्र नहीं।

(1)

जीवन पथ पर चलते चलते ऐसे मोड़ भी आते
आगे कहो किधर जाएं मन बुद्धि को भरमाते।

परिवेश से कटकर कब किसने मंजिल पाई है,
कितने भी मन भेद बनें पर संग में ही भलाई है।

मंगल है कुटुम्ब संगम, संग बैठ मिल सोचें।
ईश्वर ने जो मेल दिया उसमें मंगल ही समझें।

सम्बन्धों में गांठों को उलझाना नहीं है मंगल
भूल जाओ या माफ करो झोंको अपना अन्तर्मन।

आगे देखो ऊंचा सोचो जीवन रंग निराले
जाने कब किस मोड़ पे तुमको ये साथी ही संभाले।

क्षमा मांगता हूं राजा से धनसुख को दूँ प्यार,
शेष सभी संग लूं दूं दिल के प्रेम सहित उपहार।

मनमस्तक चरणों में है ये बेईमान भिखारी,
मंगल की चाहत में भटकन आजीवन लाचारी।

(2)

मंगलमय प्रभु ने दिया जीवन मंगल खान
अपने हर रंग इक में, मंगलमय ही जान

मंगलमय ही जान धूप छाया है सुख दुःख
हरेक रात का दिन है हर दुख के पीछे सुख।

पगला साधक है, मंगल को ठुकराता है।
बड़भागी मंगलनिवास में आ जाता है।

आत्मीयता प्रेम का संगम नाम कुटुम्ब
जग में छाए प्रेम तो बसुधा बने कुटुम्ब।

बसुधा बने कुटुम्ब ये भारत का दर्शन है।
हमसे ही पूरा होगा यह दिव्य सपन है।

साधक बना अभागा प्रेम का वंश त्याग कर
खुद का दुःख ही फैलाते सुख पंथ त्याग कर।

भिन्न भिन्न धाराओं का संगम सदा पवित्र
अपने मन में देखलो रंगबिरंगा चित्र।

संगमसदा पवित्र दोष और दुख मिट जाते
जितना डुबकी मारो पाप स्वयं कर जाते।

साधक मन शोक मिटाने संगम धारा
संगम में जो आए उसका वारा न्यारा।

मंगलकुल संगम के बिखरे रंग अनेक
प्रेम और विश्वास का सरस नजारा देख।

बिखरे रंग अनेक सभी कोनों से आए
भारतभर की सुगंध संग में लेके आए।

यह साधक कवि लाखों की प्रेरणा बनेगा
परिवारी भावों का शुभ विस्तार करेगा।

परम्परा और शान का संगम कुल बन जाए।
नूतन पीढी के लिए गौरव यह बन जाए।

गौरव यह बन जाए परस्पर रहे प्रेम से
दुनियां कुल बन जाए जो रहे प्रेम से।

साधक हैं वे देश प्रेम का पन्थ त्यागकर
खुद का दुःख ही फैलाते, सुख पंथ त्यागकर।

(4)

जोश भरा दिल कोमल है तो आऐंगे भरपूर
चूक कहीं जाए गए पछताएंगे भरपूर।

सबके जुदा संस्कार पर प्रेम का धागा एक
सिर के बल आएं देव के आशीर्वाद अनेक।

मंगल कुल संगम के चर्चे घर घर का है गान
सफल रहेगा सभी दिशा में यह प्रयत्न महान।

जग मंगल हित प्रेम और विश्वास के भाव जरुरी
मंशा से ही स्वार्थ छोड़ परमार्थ के भाव जरूरी।

*नीचे से ऊपर – चढते क्रम में

(5)

मिटजायेंगे सभी अमंगल साथ आने से
बाधाएं हट जावें संग भी साथ जाने से।

संग रहने से इक दूजे की लग जाती है आदत
कमियां भी प्यारी लगती अंकुरित लत।

भाव यदि बने रहें तेरे कभी अमंगल भी ना हो
सबका ही सहयोग परस्पर सबके संग हो।

यही कामना सफल रहे यह दिव्य कुल संगम
बुझे हुए दीपक जलाएं मंगल कुल संगम

*ऊपर से नीचे – ८,१२,१६,१८

(6)

सपरिवार आईएगा इंतजार कर रहे हम
रखिएगा विश्वास टिकेगा यहां न कोई गम।

प्रेम बढे विश्वास बढे बढती ही रहे ये लगनं
स्वास्थ्य और संस्कारों की बढती ही जाए कुशलं

निखरेगा जीवन जो आए इसमें लय व लालम
पूज्य पूर्वजों से पायी अपनी संस्कृति उत्तमं।

मनके वृथा भ्रमों को त्याग के करलें सहरमणम्
मिटे दुरियां मोह रंग सुंदरं दर्शनम्।

(7)

मस्ती और आनंद का यह मेला भी खूब
आग जलाएं प्रेम की आओ प्रिय महबूब।

लाना संगी साथ न कोई वंचित रह जाए
सरकिल में कहना सबको कोई बिचला जाए।

अक्षत कुंकुम से स्वागत सत्कार मिलेगा
हृदय से मिल कर देखें हार्दिक प्यार मिलेगा।

स्वास्थ्य संस्कृति की गलियों में धूम मचेगी
मिलकर ढूंढे तो मंजिल भी शीघ्र मिलेगी।

*नीचे से ऊपर – उतरते क्रम में

(8)

मंगलमय है मतभेदों का पहले ही उठ जाना।
गलतफहमियां और उलझन का पहले ही उठ जाना।

लय अब खुब जायेगी सब जन मिल बैठेगें संग
कुत्सित भाव बिखर जाएंगे खूब जमेगा रंग।

लटक लटक कर चलने से आनंद जरा ना आता
संत्संगत तब होती जब मंनवा निर्मल हो जाता।

गई रात की बात करे स्वागत प्रकाश का सब मिल
मस्ती और खुशियां बांटे मंगल निवास में सब मिल।

*ऊपर से नीचे – प्रथमाक्षर

(9)

मन में मंगलभाव व्यर्थ शब्दों पर जाना
गलियां भटकाएगी मूख्य मार्ग अपनाना।

संग कभी ना सुख देता उलझाता हरदम
लटकाता है अच्छे काम को समझो हमदम।

कुनमुनाते रहने से अच्छा है साफ कह देना
लग जाए यदि सही जगह पर फिर क्या कहना।

गली मस्ती घर-घर में इस संगम का यश फैलेगा
मंशा सबकी है पवित्र फिर कैसे कुछ बिगड़ेगा।?

*नीचे से ऊपर- प्रथमाक्षर

अनादि दैव शिव अदृश्य है
मातेश्वरी गंगा प्रत्यक्ष।
जीवन के दो छोर ये
परोक्ष और प्रत्यक्ष।

शिव है मानव के परम मंगल का आधार और गंगा है मानव मात्र के मंगल का साधन। वन-संस्कृति के आदि स्रोत भी है और आदि-अनादि सनातन-चिरन्तन प्रतीक भी। समभाव, समता और सह-अस्तित्व की साक्षी है। संस्कृति और इन दैवीय भावों का प्रतीक है शिव परिवार। मयूर, सर्प और मूषक –एकसाथ रहते हैं। बैल और सिंह एक ही घाट का जल पीते हैं। प्रकाश और ज्ञान का प्रतीक राजहँस माँ सरस्वती का वाहन है तो अज्ञान और अंधकार के प्रतीक उल्लूक पर माँ लक्ष्मी विराजती है। परस्पर विरोधी दिखने वाली जीवनी शक्तियों का सह अवस्थान जैसे शिव का स्वभाव है, वैसे ही अरण्य संस्कृति की पहचान भी।
सुर सरिता गंगा का भू अवतरण मानवीय इतिहास की अमर घटना शिव के बिना संभव नहीं है।

आगामी प्रकाश्य साहित्य

- ✓ पश्मीना से साफी (उपन्यास)
- ✓ औसान (उपन्यास)
- ✓ कहानी संग्रह
- ✓ नाटक संग्रह
- ✓ शतक सीरिज
- ✓ टूटता भारत
- ✓ मुक्तक शतक
- ✓ रामचरितमानस और वेद
- ✓ पर्यावरण शतक
- ✓ साधक के पत्र
- ✓ संस्मरण शतक
- ✓ श्राद्ध
- ✓ टिप्पणी-शतक
- ✓ परम्परा-आराधक
- ✓ वर्तमान साँख्य-योगदर्शन-विवेचना